New Wave in Hindi Class – X (Term – I) Course A

Section : C (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक)

गद्य-खंड

10 नेताजी का चश्मा

➤ स्वयं प्रकाश

पाठ का संक्षिप्त परिचय

'नेताजी का चश्मा' कहानी कैप्टन चश्मेवाले के माध्यम से देश के करोड़ों नागरिकों के योगदान को रेखांकित करती है, जो इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं। कहानी के अनुसार बड़े ही नहीं, बच्चे भी इसमें शामिल हैं। देश बनता है उसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से और इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी सुख-समृद्धि के लिए प्रयास करने की भावना का नाम देशभक्ति है।

पाठ का सार

हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम से एक कस्बे से गुजरना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। लेकिन उसमें एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी। अब नगरपालिका थी, तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं ज्यादा हो रही थी। अंत में कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के ड्राइंग मास्टर को मूर्ति बनाने का काम सौंपा गया। मूर्ति सुंदर थी। केवल एक चीज़ की कसर थी। नेताजी की आँख पर चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब ने पहली बार मूर्ति को देखा तो सोचा - वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल। दूसरी बार हालदार साहब कस्बे से गुजरे तो मूर्ति पर तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा था। तीसरी बार फिर नया चश्मा था। इस बार वे पानवाले से पूछ ही बैठे कि नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है। पानवाले ने बताया कि कैप्टन चश्मेवाला ऐसा करता है। हालदार साहब समझ गए कि चश्मेवाले को नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे के बुरी लगती होगी, इसलिए अपने उपलब्ध फ्रेमों में से एक को वह नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता होगा। जब किसी ग्राहक को वैसा ही फ्रेम चाहिए होता है जैसा कि मूर्ति पर लगा है, तो कैप्टन वह फ्रेम मूर्ति से उतारकर ग्राहक को देता है और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता है। किसी कारणवश मूर्ति के लिए ओरिजनल चश्मा बना ही न था।

हालदार साहब ने पानवाले से जानना चाहा कि कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही? उसने बताया कि वह लँगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा। यह तो उसका पागलपन है। हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। कैप्टन चश्मेवाले की दुकान नहीं थी, वह फेरी लगाकर चश्मे बेचता था। दो साल के भीतर हालदार साहब ने नेताजी की मूर्ति पर कई तरह के चश्मे लगे देखे। एक बार जब हालदार साहब कस्बे से गुजरे, तो मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। पूछने पर पता चला कि कैप्टन मर गया। उन्हें बहुत दुख हुआ। पंद्रह दिन बाद कस्बे से गुजरे, तो सोचा कि वहाँ नहीं रुकेंगे, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की ओर देखेंगे भी नहीं। लेकिन आदत से मजबूर चौराहा आते ही आँखें मूर्ति की ओर उठ गईं। वे जीप से उतरे और मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब की आँखें भर आईं।

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ

कस्बा = छोटा शहर; **लागत** = किसी चीज़ की तैयारी में लगने वाला खर्च; **ऊहापोह** = क्या करें, क्या न करें की स्थिति; **शासनावधि** = शासन की अवधि; **कमसिन** = कम उम्र का; **सराहनीय** = प्रशंसा के योग्य; **लक्षित करना** = देखना, समझना; **कौतुक** = आश्चर्य; **दुर्दमनीय** = जिसको दबाना मुश्किल हो; **खुशमिज़ाज** = हँसमुख; **गिराक** = ग्राहक; **किदर** = किधर; **उदर** = उधर; **आहत** = घायल; **दरकार** = आवश्यक, ज़रूरी; **द्रवित** = अभिभूत होना; **पारदर्शी** = आर-पार दिखाई देने वाला; **नतमस्तक** = सम्मान में सिर झुकाना; **अवाक्** = चुप, मौन; **प्रफुल्लता** = खुशी; **हृदयस्थली** = विशेष महत्व रखने वाला स्थान; **प्रतिष्ठित** = स्थापित।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

समेटिव असेसमेंट के लिए

एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : चश्मेवाला न तो नेताजी का साथी था और न ही आजाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही। फिर भी लोग उसे 'कैप्टन' कहकर पुकारते थे। वह बूढ़ा, मरियल-सा लँगड़ा, सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए, फेरी लगाकर चश्मे बेचता था। लोग मज़ाक उड़ाने के लिए उसे कैप्टन कहकर बुलाते थे।

2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था, लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर : (क) हालदार साहब मायूस इसलिए हो गए थे क्योंकि मास्टर मोतीलाल मूर्ति का चश्मा बनाना भूल गए थे और मूर्ति को बदल-बदल कर चश्मे पहनाने वाला कैप्टन मर गया था। उन्होंने सोचा कि नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं होगा। वे बिना चश्मे की मूर्ति नहीं देखना चाहते थे।

(ख) सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि लोगों में देशभक्ति की भावना का अभाव नहीं हुआ है। उनके हृदय में स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों के प्रति आज भी श्रद्धा भाव है। देश के निर्माण में वे अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं।

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक इसलिए हो उठे क्योंकि कस्बे के लोगों में से ही किसी ने प्रतिमा को सरकंडे का चश्मा पहना दिया था। इस प्रकार नेताजी के सम्माननीय व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की थी। किसी ने कैप्टन के अब तक के प्रयासों के पीछे देश-प्रेम और देश-सेवा के भाव को समझा था।

3. आशय स्पष्ट कीजिए- "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर : इस कथन का आशय यह है कि अपने शहीदों और बलिदानियों का सम्मान न करने वाले देश का भविष्य क्या होगा। देश के लिए तन-मन-धन न्योछावर करने वाले देशभक्तों को सम्मान देना चाहिए न कि उन पर हँसना चाहिए। लोग अपना ईमान बेचकर स्वार्थ पूर्ति में लग गए हैं। लोगों की संकुचित और बदलती सोच में देश का भविष्य असुरक्षित है।

4. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए। **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिज़ाज आदमी था। उसकी तोंद इतनी बढ़ी हुई थी कि कभी-कभी बात करने पर थिरक भी जाती थी। ज़्यादा पान खाने के कारण उसके सब दाँत लाल-काले हो गए थे। वह पीछे घूमकर दुकान के नीचे बार-बार पीक थूक देता था। आँखों ही आँखों में हँसकर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रकट करता था। वह देसी भाषा में बहुत सटीक बात करता था। ज़रूरत से ज्यादा प्रश्नों का पूछा जाना उसे पसंद नहीं था। पानवाला भावुक भी था। चश्मेवाले के मरने की खबर देते हुए वह उदास हो गया। उसकी आँखें भर आईं।

5. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!" कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर : पानवाला कैप्टन को लँगड़ा, कमज़ोर और असमर्थ समझता था। उसका मज़ाक उड़ाता था। बार-बार मूर्ति को चश्मा पहनाने को वह पागलपन समझता था। फौज़ में काम करने वाले समर्थ लोगों को ही देश-सेवक समझने की भूल करता था। छोटे-छोटे कामों से देश के गौरव और महानता की रक्षा करने वालों के महत्व को समझ पाना उसके लिए कठिन था। इस टिप्पणी पर हमारी प्रतिक्रिया यह है कि पानवाले द्वारा किसी देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना उचित नहीं है।

रचना और अभिव्यक्ति

6. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं-

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

(ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला- साहब! कैप्टन मर गया।

(ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था। **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : (क) हालदार साहब सच्चे देशभक्त थे। स्वतंत्रता प्राप्ति में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के योगदान की कीमत वे समझते

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

थे। इससे उनकी नेताजी के प्रति सम्मान प्रकट करने की विशेषता का पता चलता है।

(ख) यह वाक्य पानवाले की भावुकता तथा सहृदयता का परिचायक है। हालाँकि वह कैप्टन के प्रति उपेक्षा दर्शाता था, किंतु कैप्टन की मृत्यु से वह दुखी भी था।

(ग) इस वाक्य से कैप्टन की नेताजी के प्रति श्रद्धा की भावना उजागर होती है। इससे कैप्टन की देशभक्ति की भावना का परिचय मिलता है।

7. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मानस-पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् नहीं देखा होगा, तब तक उनके मानस-पटल पर यह अंकित रहा होगा कि शायद वह आजाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही रहा होगा या नेताजी का साथी होने के कारण उनके देश के प्रति योगदान को भूल नहीं पाया होगा। हालदार साहब की नज़र में वह एक रोबीला तथा दबंग व्यक्ति रहा होगा।

8. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है।

(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर : (क) इस तरह की मूर्ति लगाने का उद्देश्य यह होता है कि लोगों में महापुरुषों के प्रति सम्मान की भावना जागृत हो। लोग उनके योगदान को याद रखें तथा भावी पीढ़ियों को उनके विषय में जानकारी प्राप्त हो सके।

(ख) हम अपने इलाके के चौराहे पर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अपना नाम लिखवाने वाली झाँसी की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे।

स्त्री होने के बावजूद रानी लक्ष्मीबाई ने सन 1857 में आज़ादी का बिगुल बजा रियासतों को एक किया। लोगों को जागरूक बनाया और अपने देशभक्त साथियों के साथ आज़ादी की नींव रखी।

(ग) उस स्थापित मूर्ति के प्रति मेरा तथा अन्य सभी लोगों का यह उत्तरदायित्व होना चाहिए कि उसे सुरक्षित रखें, उसके आस-पास साफ-सफाई रखें तथा समुचित प्रकाश की व्यवस्था करें।

9. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं, जैसे सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि।
अपने जीवन से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख करें और उन पर अमल भी करें।

उत्तर : मैं अपने जीवन में देश-प्रेम को सर्वाधिक महत्व देता हूँ, इसलिए अपने देश के नाम को ऊँचा करने के लिए मैं हर प्रकार से प्रयत्न करता हूँ, जैसे–न केवल पढ़ाई-लिखाई बल्कि खेल-कूद में भी सक्रिय भाग लेकर, अच्छा परिणाम लाकर अपना एवं देश का नाम रोशन करना चाहता हूँ।

देश की एकता को बनाए रखने के लिए सांप्रदायिक भेद-भाव से दूर रहता हूँ एवं सबको एक समान समझने का प्रयत्न करता हूँ। धर्म या कौम के नाम पर कोई अप्रिय बात नहीं कहता।

अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत का सम्मान करता हूँ तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता हूँ।

10. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसकी मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर : कोई ग्राहक आ गया समझिए। उसको चौड़ा फ्रेम चाहिए। तो कैप्टन तुरंत कहाँ से लाएगा? तब उसको मूर्ति पर लगा फ्रेम दे दिया। मूर्ति पर दूसरा फ्रेम लगा चश्मा पहना दिया।

11. 'भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्द आने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर : एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आ जाने से उसका शब्द-भंडार बढ़ता है। भाषा अधिक ग्रहण करने के योग्य बन जाती है। सबसे बड़ी बात कि ऐसी भाषा प्रभावशाली होती है।

भाषा अध्ययन

12. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए-

(क) नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।

उत्तर : निपात - तो, भी।

वाक्य - राम ने वादे तो बहुत किए थे, परंतु निभाया एक भी नहीं।

(ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

उत्तर : निपात - ही।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

वाक्य - जैसे ही भाई आया, माँ रोने लगीं।

(ग) यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था।

उत्तर : निपात - तो।

वाक्य - राम ने कहा तो था पर किया नहीं।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

उत्तर : निपात - भी।

वाक्य - इतनी भी जल्दी मत मचाओ कि काम बिगड़ जाए।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

उत्तर : निपात - तक

वाक्य - मैं बहुत देर तक पिताजी का इंतजार करती रही।

13. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए-

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।

उत्तर : उसके द्वारा अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिए जाते थे।

(ख) पानवाला नया पान खा रहा था।

उत्तर : पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पानवाले ने साफ़ बता दिया था।

उत्तर : पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था।

(घ) ड्राइवर ने जोर-से ब्रेक मारे।

उत्तर : ड्राइवर द्वारा जोर-से ब्रेक मारे गए।

(ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

उत्तर : नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

उत्तर : हालदार साहब के द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

14. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए -

जैसे - अब चलते हैं।

- अब चला जाए।

(क) माँ बैठ नहीं सकती।

उत्तर : माँ से बैठा नहीं जाता।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

उत्तर : मुझसे देखा नहीं जाता।

(ग) चलो अब सोते हैं।

उत्तर : चलो अब सोया जाए।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

उत्तर : माँ से रोया भी नहीं जाता।

अन्य परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (CCE पद्धति पर आधारित)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए–

I. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

हालदार साहब की आदत पड़ गई, हर बार कस्बे से गुज़रते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से पूछ लिया, क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

पानवाला एक काला मोटा खुशमिज़ाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों ही आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, कैप्टन चश्मेवाला करता है।

क्या करता है? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाए।

चश्मा चेंज़ कर देता है। पान वाले ने समझाया।

क्या मतलब? क्यों कर देता है? हालदार साहब अब भी समझ नहीं पाए।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा। तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया। अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आई। एक चश्मे वाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताज़ी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है।

(i) मूर्ति का चश्मा हर बार कौन बदल देता था?

(क) हालदार **(ख)** पानवाला

(ग) गाँव का कोई बच्चा **(घ)** कैप्टन चश्मेवाला

(ii) पानवाला कैसा आदमी था?

(क) काला-मोटा खुशमिज़ाज **(ख)** गुस्सैल

(ग) चिड़चिड़ा **(घ)** पतला-दुबला सुन्दर

(iii) हालदार साहब को किस बात की आदत पड़ गई थी?

(क) चौराहे पर रुकने की **(ख)** पान खाने की

(ग) मूर्ति को ध्यान से देखने की **(घ)** तीनों की

(iv) चश्मे वाला नेताजी की मूर्ति पर चश्मा क्यों पहनाता था?

(क) अपने विज्ञापन के लिए

(ख) देशभक्ति के कारण

(ग) नेता जी के प्रति सम्मान के लिए

(घ) (ख) और (ग) दोनों

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

(v) हालदार साहब का प्रश्न सुनकर पानवाला कैसे हँसा?

(क) मन-ही-मन में **(ख)** मुँह-ही-मुँह में

(ग) आँखों-ही-आँखों में **(घ)** होठों-ही-होठों में

उत्तर : (i) (घ) **(ii)** (घ) **(iii)** (घ) **(iv)** (घ) **(v)** (ग)

II. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए। [CBSE 2010 (Term-I)]

अब हालदार साहब को बात कुछ समझ में आई। एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेता जी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है। मानो चश्मे के बगैर नेता जी को असुविधा हो रही हो। इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेता जी की मूर्ति पर फिट कर देता है। लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है, तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम-संभवत: नेता जी से क्षमा माँगते हुए लाकर ग्राहक को देता है और बाद में नेता जी को दूसरा फ्रेम लौटा देता है। वाह! भई खूब! क्या आइडिया है।

(i) बात किसके समझ में आ गई?

(क) कैप्टन चश्मेवाले के **(ख)** हालदार साहब के

(ग) पान वाले दुकानदार के **(घ)** ग्राहक को

(ii) सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा के चश्मे को कौन बदल देता था?

(क) कोई भी ग्राहक **(ख)** हालदार साहब का ड्राइवर

(ग) पान वाला दुकानदार **(घ)** चश्मे वाला (कैप्टन)

(iii) कैप्टन चश्मेवाला नेता जी की मूर्ति पर चश्मा किस भावना के वशीभूत हो लगाता था?

(क) नेता जी के प्रति श्रद्धा व देशभक्ति की भावना

(ख) सेनानियों के प्रति अनादर की भावना

(ग) मूर्ति की सजावट के लिए

(घ) मूर्तिकार की मूर्ति बनाने की कमी को उजागर करने के लिए

(iv) चश्मे वाले को कस्बे के लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

(क) वह फ़ौज में था **(ख)** वह सच्चा देशभक्त था

(ग) कैप्टन जैसे कपड़े पहनता था

(घ) फौज़ के किसी अधिकारी का बेटा था

(v) उपरोक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

(क) लखनवी अंदाज़ **(ख)** बालगोबिन भगत

(ग) नेता जी का चश्मा

(घ) उपरोक्त किसी भी पाठ से नहीं

उत्तर : (i) (ख) **(ii)** (घ) **(iii)** (क) **(iv)** (ख) **(v)** (ग)

III. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए। [CBSE 2010 (Term-I)]

हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके जैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी। नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाबघर बना दिए, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेता जी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी उसी प्रतिमा के बारे में है, बल्कि उसके भी एक छोटे-से हिस्से के बारे में।

(i) हालदार साहब कस्बे जाते थे–

(क) प्रतिदिन **(ख)** प्रतिमास

(ग) पंद्रहवें दिन **(घ)** कभी-कभी

(ii) नेता जी की मूर्ति लगी हुई थी–

(क) बाज़ार में **(ख)** कस्बे में

(ग) विद्यालय में **(घ)** मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर

(iii) कस्बे में कुछ-न-कुछ होता था क्योंकि वहाँ–

(क) हालदार साहब जाते थे **(ख)** वहाँ बाज़ार था

(ग) एक नगरपालिका थी **(घ)** वहाँ एक अधिकारी था

(iv) पेशाबघर का समास होगा–

(क) पेशाब का घर **(ख)** पेशाब में घर

(ग) पेशाब के लिए घर **(घ)** इनमें से कोई नहीं।

(v) यह कथा है–

(क) हालदार साहब की

(ख) नेता जी की मूर्ति के छोटे से हिस्से की

(ग) नगरपालिका की **(घ)** सुभाषचंद्र की

उत्तर : (i) (ग) **(ii)** (घ) **(iii)** (ग) **(iv)** (ग) **(v)** (ख)

IV. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुखी हो गए। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया और कैप्टन मर गया। सोचा, आज यहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मज़बूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

(i) हालदार साहब बार-बार सोचते रहे कि क्या होगा उस कौम का जो...

(क) देशवासियों पर व्यंग्य करती है
(ख) लोगों से मूर्ति बनवाती है
(ग) देशभक्तों को चश्मे पहनाती है
(घ) देशभक्तों पर हँसती है

(ii) नेता जी की मूर्ति कहाँ लगी हुई थी?

(क) कस्बे के मुख्य चौराहे पर
(ख) कस्बे के बड़े मंदिर पर
(ग) कस्बे के नगरपालिका दफ्तर में
(घ) कस्बे के मोड़ पर

(iii) हालदार साहब फिर कब उसी कस्बे से गुजरे?

(क) कुछ दिनों बाद **(ख)** एक महीने बाद
(ग) पंद्रह दिन बाद **(घ)** पाँच दिन बाद

(iv) मूर्ति के ठीक सामने जाकर अटेंशन में कौन खड़े हो गए?

(क) मास्टर मोतीलाल जी **(ख)** कैप्टन साहब
(ग) ड्राइवर साहब **(घ)** हालदार साहब

(v) 'आँखें भर आईं'-मुहावरे का सही अर्थ है-

(क) क्रोध आना **(ख)** आँसू आना
(ग) आँखें लाल होना **(घ)** चिढ़ जाना

उत्तर : **(i)** (घ) **(ii)** (क) **(iii)** (ग) **(iv)** (घ) **(v)** (ख)

V. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं खयालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर, चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ़ चले, फिर रुके, पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?

पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुसकराकर बोला–नहीं साहब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं।

1. हालदार साहब किसके समक्ष नतमस्तक हो गए?

(क) पानवाले के पान के **(ख)** कस्बे के लोगों के
(ग) गाँव वालों के आदर के **(घ)** चश्मेवाले की देशभक्ति के

2. आजाद हिंद फौज़ का संबंध किससे है?

(क) लाला लाजपतराय से **(ख)** चन्द्रशेखर आज़ाद से
(ग) नेताजी सुभाषचंद्र बोस से **(घ)** भगतसिंह से

3. हालदार साहब ने पानवाले से पूछा–

(क) चश्मेवाला पुलिस का साथी है?
(ख) चश्मेवाला आतंकियों का साथी है?
(ग) चश्मेवाला पिताजी का मित्र है?
(घ) चश्मेवाला नेताजी का साथी है?

4. चश्मेवाले को सनकी कौन समझता है?

(क) हालदार साहब **(ख)** पान वाला
(ग) गाँववाले **(घ)** सभी

5. 'कौतुकभरा' शब्द का आशय है–

(क) प्रेम-भरा **(ख)** आनंद-भरा
(ग) व्यंग्य-भरा **(घ)** हैरानी-भरा

उत्तर : **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (घ)

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कस्बे के लिए नगरपालिका कौन-कौन से कार्य करती है?

उत्तर : नगरपालिकाएँ कस्बे के लिए छोटे-मोटे काम ही करती हैं। जैसे–सड़क बनवाना, सार्वजनिक शौचालयों की व्यवस्था करवाना, कबूतरों के लिए छतरी बनवाना, कभी-कभी कवि सम्मेलन करवाना आदि।

2. स्कूल मास्टर को मूर्ति बनाने का काम क्यों दिया गया?

उत्तर : अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं ज्यादा हो रही थी तथा अच्छे मूर्तिकार की जानकारी का अभाव था। इसलिए ऊहापोह की स्थिति में गाँव के स्कूल के मास्टर को ही मूर्ति बनाने का काम सौंप दिया गया।

3. कैप्टन कौन था? उसे कौन-सी बात आहत करती थी?

[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : कैप्टन एक चश्मेवाला बूढ़ा, मरियल और लँगड़ा आदमी था। उसे नेताजी की मूर्ति पर चश्मे का न होना आहत करता था।

4. लेखक कस्बे को न तो बहुत बड़ा और न ही बहुत छोटा कहता है, क्यों?

उत्तर : कस्बे में थोड़े-से पक्के मकान, एक बाज़ार था। एक लड़कों का तथा एक लड़कियों का स्कूल था। एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

5. हालदार साहब को पान वाले की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी और क्यों?

उत्तर : हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। पानवाले ने चश्मेवाले की भावना का भी सम्मान नहीं किया। उसे लँगड़ा और पागल कहा। एक देशभक्त का अपमान हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा।

6. हालदार साहब किस बात से दुखी थे?

[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : जब पान वाले ने हालदार साहब से यह कहा कि वह लँगड़ा क्या जाएगा फौज में तो उसके कैप्टन की हँसी उड़ाई जाने वे यह सोचकर दुखी हो गए कि क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।

7. कैप्टन का व्यक्तित्व कैसा था?

उत्तर : कैप्टन नाम का चश्मेवाला शरीर से बूढ़ा और दुर्बल था। वह लँगड़ाकर चलता था। सिर पर गांधी टोपी लगाए रहता और आँखों पर काला चश्मा पहनता था। उसके एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची रहती थी जिसमें चश्मे होते थे। तथा दूसरे हाथ में बाँस पर लटके चश्मे थे। वह गली-गली जाकर चश्मे बेचता था।

8. हालदार साहब चक्कर में क्यों पड़ गए?

उत्तर : चश्मेवाले को देखकर हालदार साहब चक्कर में पड़ गए क्योंकि उन्होंने सोचा था कि चश्मेवाला कोई लंबा-तगड़ा फ़ौजी अथवा देशभक्त एवं रौबीला जवाना होगा परंतु चश्मेवाले का व्यक्तित्व हालदार साहब की सांच के बिलकुल विपरीत निकला।

9. हालदार साहब मूर्ति के बारे में किस निष्कर्ष पर पहुँचे?

उत्तर : हालदार साहब मूर्ति के बारे में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाएगा। मतलब मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है, वरना देशभक्ति तो आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है।

10. 'नेताजी का चश्मा' पाठ से क्या संदेश मिलता है?

उत्तर : 'नेताजी का चश्मा' पाठ के देशभक्ति की भावना का संदेश देता है। पाठ में उन भावनाओं की ओर संकेत किया गया है जिससे एक देशभक्त एवं उसकी देशभक्ति सम्मान पाती है। साथ ही यह भी प्रेषित किया गया है कि हमें उन लोगों को सम्मान देना चाहिए जो देश के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी पीछे नहीं रहते। कर्तव्य पालन के लिए अभिप्रेरणा भी मिलती है।

11. कहानी के आधार पर हालदार साहब के व्यक्तित्व का परिचय दें।

उत्तर : हालदार साहब का व्यक्तित्व देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत था। वे शहीदों और देशभक्तों का सम्मान करते थे तथा किसी भी तरह से देशभक्ति का मजाक उड़ाया जाना पसंद नहीं करते थे। तभी तो पानवाले द्वारा चश्मे वाले का मज़ाक उड़ाना उन्हें अच्छा नहीं लगता। उनके अनुसार वह भावना सर्वोपरि है जिसमें देश के प्रति प्रेम और बलिदान का भाव होता है। हालदार साहब स्वभाव से भावुक भी थे। कैप्टन चश्मेवाले की मृत्यु का समाचार सुन वह अपने आँसू रोक नहीं पाते।

12. चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति पर चश्मे क्यों लगाता था?

[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : चश्मेवाले के मन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लिए अपार श्रद्धा थी। नेताजी की मूर्ति को वह चश्मे के बिना नहीं देख सकता था क्योंकि नेताजी चश्मा पहनते थे। उनकी मूर्ति को बिना चश्मे के देखकर उसे बुरा लगता था। उसके दिल पर चोट लगती थी। इसीलिए वह अपनी तरफ़ से एक चश्मा उनकी मूर्ति को पहना देता था।

13. चौराहों पर लगी महापुरुषों की मूर्तियों के प्रति जनता का क्या उत्तरदायित्व है?

उत्तर : चौराहों पर लगी हुई मूर्तियों के प्रति जनता का उत्तरदायित्व है कि उन्हें टूटने-फूटने न दें। समय-समय पर सफाई करते रहें ताकि वे गंदी न हों। इसके अतिरिक्त समय-समय पर उनके सम्मान में सभा, गोष्ठी या समारोह का आयोजन करें।

14. चश्मेवाला नेताजी से माफ़ी क्यों माँगता होगा?

उत्तर : चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति से चश्मा हटाना नहीं चाहता था। परंतु जब कोई ग्राहक आकर वैसा ही फ्रेम माँगता था जैसा फ्रेम नेताजी की मूर्ति ने पहन रखा है, तब वह मूर्ति पर लगा फ्रेम ग्राहक को दे देता था और मूर्ति को उसकी जगह दूसरा चश्मा पहना देता था। इसी कारण वह मन ही मन उनसे माफ़ी माँग लेता होगा।

15. कैप्टन हालदार साहब के लिए दया का पात्र क्यों था?

उत्तर : कैप्टन हालदार साहब के लिए दया का पात्र इसलिए था क्योंकि उन्होंने सोचा कि वह एक देश भक्त है। उसने अपना सब कुछ देश के लिए न्योछावर कर दिया है, फिर भी लोग उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

16. हालदार साहब चश्मेवाले की किस बात पर खुश होते थे?

उत्तर : हालदार साहब नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाने के कारण चश्मेवाले से खुश थे। उन्हें इस बात की खुशी थी कि कम-से-कम कोई तो है जिसे सुभाषचंद्र बोस की परवाह है। किसी के कारण तो इस छोटे से कस्बे में देशभक्ति जीवित है।

17. हालदार साहब को मूर्ति में कौन-सी कमी नज़र आई जिसे उन्होंने नज़रअंदाज कर देना मुनासिब समझा?

उत्तर : नेताजी की मूर्ति संगमरमर की थी कोई दो फुट ऊँची। नेताजी सुंदर लग रहे थे। मूर्ति देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

खून दो...' वगैरह नारे याद आने लगते थे। केवल एक चीज़ की कमी थी जो देखते ही खटकती थी, वह थी नेताजी की आँखों पर संगमरमर के स्थान पर सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम लगा हुआ था।

18. हालदार साहब मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर भावुक क्यों हो गए?

उत्तर : नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा देखकर इसलिए भावुक हो गए कि अभी भी लोगों में देशभक्त सेनानियों एवं उनके प्रति श्रद्धा रखने वालों के प्रति सम्मान करने वाले दुनिया में हैं।

19. हालदार साहब को क्या आदत पड़ गई थी?

उत्तर : हालदार साहब को यह आदत पड़ गई थी कि, वे जब भी कस्बे से गुजरते तो जीप चौराहे पर रुकवाते, पानवाले की दुकान पर पान खाते और पान खाते-खाते नेताजी की मूर्ति को ध्यान से देखते रहते।

20. हालदार साहब दूसरी बार कस्बे से गुजरते अपने किस कौतूहल का निवारण किस तरह किया?

उत्तर : दूसरी बार जब हालदार साहब कस्बे से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। उन्होंने ध्यान से देखा तो पाया कि इस बार मूर्ति का चश्मा बदला हुआ है। पहले मोटे फ्रेम वाला चौकोर चश्मा था और अब तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतूहल बढ़ा और जब उनका कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो उन्होंने उसके निवारण के लिए पानवाले से पूछ ही लिया, 'क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?'

21. कौन-सी बात हालदार साहब को चकित और द्रवित करने वाली थी? **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : हालदार साहब जानना चाहते थे कि नेताजी की मूर्ति का ओरिज़िनल (वास्तविक) चश्मा कहाँ गया? पानवाले द्वारा इस प्रश्न के उत्तर में यह कहना कि मूर्ति बनाने वाले विद्यालय के ड्रांइग-मास्टर नेताजी का चश्मा बनाना ही भूल गए। यह बात हालदार साहब को चकित और द्रवित करने वाली थी।

फ़ॉरमेटिव असेसमेंट के लिए

क्रियाकलाप

विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार के और विभिन्न आकृति के चश्मे बनवाए जा सकते हैं अथवा उनके विभिन्न चित्रांकन करवाए जा सकते हैं। इसके साथ ही चश्मे की यात्रा-कथा जानने का मौका भी दे सकते हैं। निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर वे कुछ जानकारी हासिल कर सकते हैं-

विद्वानों के अनुसार भारत में चश्मे का आविष्कार ईसा से पाँच सौ वर्ष पहले हो चुका था। ईसा के बाद छठी शताब्दी में ह्वेनसाँग नाम का एक चीनी विद्वान भारत आया था। उसने भारत की जिन अनेक अद्भुत वस्तुओं का वर्णन किया है, उनमें आँखों के लिए चमकदार लैंस भी हैं। भारत से बाहर यूनान में वहाँ के प्रसिद्ध चिकित्सक युक्लिड ने आँखों पर अपना एक ग्रंथ लिखा था 'ऑप्टिक्स'। लेकिन चश्मे के बारे में उस ग्रंथ में भी कोई विशेष जानकारी नहीं है। 1038 ईस्वी में मिस्र में भी आँखों पर एक पुस्तक लिखी गई थी, जिसमें आँखों की रोशनी बढ़ाने के लिए लैंस के उपयोग की चर्चा की गई थी।

चश्मे के विकास में चीन का भी योगदान महत्वपूर्ण है। आम तौर से वहाँ यही बात प्रचलित थी कि जब चीनी सरदारों की आँखों की ज्योति कम हो जाती तो वे अपने दासों को यह काम सौंपा करते कि वे उन्हें पढ़कर सुनाएँ। नेत्र-ज्योति के बारे में तकनीकी ज्ञान और लैंस के प्रयोग की बात चीन ने लगभग छठी शताब्दी में भारत से सीखी। के.एस. लैटोरेट ने अपनी पुस्तक चीनी इतिहास एवं सभ्यता में लिखा है कि चीनियों ने शीशे के लैंस का प्रयोग भारत से ही सीखा था। एक दूसरे लेखक एफ.एच. गैरीसन का कहना है कि लगभग 1260 ई. में चीनियों ने इसे तुर्किस्तान से सीखा और तुर्किस्तान ने भारत से। इससे यह तो स्पष्ट है कि नेत्र विज्ञान और चश्मे का जन्म मूल रूप से भारत में ही हुआ और यहीं से वह अन्य देशों में गया। चीनियों ने इसके बाद चश्मे की निर्माण-कला के विकास में काफ़ी योगदान किया।

इस प्रकार आप विद्यार्थियों में चश्मे के बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता उत्पन्न कर सकते हैं। इंटरनेट की सहायता से अथवा विभिन्न पुस्तकों की सहायता से चश्मे की यात्रा-गाथा पर एक लघु लेख लिखने या प्रोजेक्ट बनाने का बच्चों से आग्रह कर सकते हैं।

कक्षा-कार्य

अध्यापक/अध्यापिका कहानी से सम्बन्धित कुछ मौखिक प्रश्न पूछ सकते हैं। जैसे–

- 'नेताजी का चश्मा' कैसा था?
- 'कैप्टन' कौन था? वह नेताजी का चश्मा बार-बार बदल क्यों देता था?
- इसमें बच्चों का क्या योगदान रहा?

गृह-कार्य

- 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के बारे में जानकारी जुटाइए। कब, किसने और कैसे इसकी स्थापना की थी? इस फ़ौज की नीति क्या थी और इसका उद्देश्य क्या था? इस पर एक प्रस्ताव लिखिए।
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जीवनी पढ़िए और भारत से उनके पलायन की गाथा जानिए।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN